रात्रिक्लास 1-3-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बाप-दादा यहाँ बैठे हैं। ऐसा कोई मनुष्य सारी दुनिया मे नही होगा जो जो बाप दादा कहते हों। भल कोई कहते हैं हमारे में ईश्वर है, पढ़ाते हैं परन्तु बापदादा कोई नहीं कह सकते होंगे। ब्रह्मा है शिव बाबा का एडाप्शन बच्चा। इतने सब ढेर बच्चे हैं। बाबा यहां बैठे बात भी सब से करते हैं। ऐसा कोई नहीं होगा जो अर्थ सहित बाप-दादा कहता हो। कहे तो भी यह नालेज दे न सके। तुम बच्चे यह भी समझाये सकते हो माउन्ट आबू में हमारा बाप दादा बैठे हैं। अगर कहते हैं हमारे में परमेश्वर है तो एडाप्शन किया होगा। यहां तो लिखते भी हैं शिव बाबा केअर ऑफ ब्रह्मा बाबा। जिसको एडाप्ट किया उसका नाम बदल दिया। तुम्हारा भी नाम बदल दिया था ना। इनका नाम तो कब बदल नहीं सकता। कब आश्चर्यवत भागन्ती हो न सके। इनको सर्टन है। सभी बच्चे जहां भी जानते हैं हमारा बाप दादा है। हम बाप दादा द्वारा यह वर्सा लेते हैं। लौकिक बाप भी है फिर पारलौकिक बाप भी है। ऐसा कोई नहीं कहेंगे हमको तीन बाप है। किसकी बुधि न होगा। तुम बता सकते हो प्रजापिता अ ब्रह्मा भी हमारा बाप है। पारलौकिक बाप भी हमको मिला है। ड्रामा प्लैन अनुसार। ड्रामा अक्षर कोई नही जानते हैं। वर्ल्ड का हिस्ट्री जागरफी एक्यूरेट रिपीट होता है तो ड्रामा ही कहेंगे। यह बेहद का ड्रामा तो बिलकुल ही एक्यूरेट है। उस ड्रामा में तो फिल्म बदली कर दूसरी जायन्ट कर सकते हैं। यह तो अनादी अविनाशी है। यह सृष्टि का चक्र रिपीट करता रहता है। लाखों वर्ष कहते तो भी रिपीट तो करेगा ना। लाखों वर्ष के हिसाब से तो आदमी बहुत हो जायेंगे। अभी हिसाब निकालते हैं इतने हिन्दु हैं इतने मुसलमान हैं। लाखों वर्ष की तो आदम सुमारी बहुत हो जाये। बाप ने समझाया है यह 84 का चक्र है। अभी तुम जज करो ठीक है ना। महाभारत लड़ाई अभी2 हुई थी। जास्ती टाईम नहीं हुआ है। मुसलो की लड़ाई 5000वर्ष बाद फिर होनी है। दिन प्रति दिन तुम बच्चों को बाप समझाते रहते हैं। तुम कहते हो हमको आकर पावन बनाओ। फिर पावन दुनिया में ले जाओ। शान्तिधाम है आत्माओं के रहने का स्थान। वह धाम तो सभी आत्माओं का है। फिर सतयुग सुखधाम भी मानेंगे। फिर वह पुरानी दुनिया होती है। अभी कलियुग आयरन एज है आत्मा में खाद पड़ने सेतमोप्रधान हो जाती है। सतयुग सतोप्रधान को गोल्डेन एज कहा जाता है। अभी तुम बच्चे इन बातों को समझाते हो। ज्ञान नालेज ही सॉस ऑफ अव इनकम है। भक्ति -मार्ग में शास्त्र सुनाते हैं। वह भी सॉस आफ इनकम हो जाती है। सन्यासी -उदासी आद जो भी शास्त्र बबु सुनाते हैं वह भी ड्रामा में नूंध है। फायदा कुछ भी नहीं। कर के अल्प काल का सुख मिलेगा। अभी तुम्हारी तो कमाई है 2। जन्मों की। और कोई नहीं होगा। जो ऐसे पढ़ता हो। यह है मनुष्य से देवता बनने की बात। गायन भी है नाउम्म मनुष्य से से देवता किये ·· कोई भी साधू सन्त महात्मा कह नहीं सकते है हम तुमको पढ़ाते हैं। कहते हम ही भगवान हैं। भगवान ने वेद-शास्त्र आद सुनाई। यह कौन कहते हैं। भगवान ने तो राजयोग की गीता सुनाई जिससे राजा बन गये। बाकी तो एमआवजेक्ट है नहीं। यह लोग वेदान्त को ऊपर ले जाते हैं। वास्तव मे सर्व शास्त्रमई शिरोमणी गीता जो बाप सम्मुख बैठ समझाते हैं। फिर भी माया विकर्म करा देती हैं। मनसा तूफान मल आवे परन्तु कर्म इन्द्रियों से नहीं करना है। बच्चे समझते भी हैं फिर क्या होता है। बाप कहते हैं मन्मनाभव। अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो। ऐसे तो कोई नहीं कहेगा। पतित तो सभी हैं ना। पुनर्जन्म लिया होगा तो इस समय भी तमोप्रधान है। पहले नम्बर जो विश्व का मालिक था वह भी अभी तमोप्रधान है। राव और रंक होते हैं ना। सिर्फ वहां सुख यहां दुःख। यह हैल वह हेविन। हेविन तो जस देवतायें ही रहते हैं। वहां रावण राज्य ही नहीं। तो दुःख की बात ही उठती। कर्म कूटते भी यहां ही हैं। वहां यह कोई बात ही नहीं। यहां तुम बाप के सन्मुख हो। भगवान पढ़ाते हैं। भगवान पढ़ाते हैं और स्कूल में न आये तो क्या कहेंगे। भगवान फिर बनाने भी भगवान-भगवती है।

यहां तो बिमारी में भी लंगड़ाते आते हैं। सेन्टर पर कुछ किसको होगा तो आवेंगे ही नहीं। पढ़ाई तो मिस न करनी चाहिए। पहले पहले नम्बरवन को लगभग भगवान भगवती ही कहेंगे ना। ऊंच ते ऊंच भगवान फिर उनके पीछे विष्णु कहेंगे। इस संगम युग का तो किसको भी पता नहीं है। हम भगवान के बच्चे हैं। भगवान तो स्वर्ग स्थापन करते हैं। हम उनके बच्चे हैं तो तो हम स्वर्ग के मालिक होने चाहिए। सभी क्यों नहीं स्वर्ग में हैं। स्वर्ग में आ जाये तो सारा झाड़ देवताओं का ही बन जाये। इस नालेज को कोई भी कापी नहीं कर सकते। भल कहते हैं हम ईश्वर के प्रेरणा से सुनाते हैं। परन्तु बेहद के बाप से बेहद का वर्सा पाना है। वह कोई नहीं जानते हैं। गाड फादर का वर्सा है हां उनके घर में जाना। गाडफादर को याद करते2 पाप भी कट जाये और चला भी जाये। और जो भी धर्म स्थापक अपने धर्म में हिंसा पाते हैं वह भी आ जावेंगे। होकर गये हों तो भी नेम नहीं। बाप लक्ष्य देते हैं बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। कहेंगे यह बात तो ठीक है। लिबरेटर एक है उनको याद करते रहने से ही हमारे विकर्म विनाश होंगे। धर्म स्थापक तो ऊंच पद वाले बनते हैं ना। वह भी आवेंगे आकर लक्ष्य ले जावेंगे। गाड को तो जानते हैं बाकी उनको याद करना है। सभी आत्माओं का बाप है। ब्रदर्स भी बहुत समझते हैं। सर्वव्यापी भगवान कहने से फादरहुड हो पड़ता। तो उनको कब कापी नहीं कर सकेंगे। तो तुम सिध कर बताते हो। उनका अगर गुरु होता तो गुरु का सिर्फ एक शिष्य होगा क्या। ऐसा तो हो न सके। कहां भी जाओ कब तुमको यह राजयोग सिखला न सके। कितना रात-दिन का फर्क है। तुम समझाते हो यह ईश्वरीय क्लास है। सौंस आफ इनकम हैं। कब पढ़ाई मिस न करनी चाहिए। फिर भी मिस कर देते हैं। पूछना चाहिए तुमको राजयोग की शिक्षा मिली फिर घर क्यों बैठ गये हो। तुम तो कहते थे महाराजा-महारानी बनेंगे फिर कहां हो? आफिस बड़ी चाहिए सारा-सारा दिन दिन लिखते रहे चिट्ठियां। हम स्टुडन्ट हैं राजयोग सिखेंगे फिर ऐसी पढ़ाई न पढ़ो तो रिमाईन्डर भेजना चाहिए। यहां से चिट्ठी जावेगी तो जैसे सुप्रीम टीचर से जाती है। तुम कहते हो फिर क्यों नहीं आते हो। तुम भगवान से पढ़ने नहीं चाहते हो बाप को भी पार्कती दे दी। आफिस लिखा-पढ़ी को बहुत बड़ी होनी चाहिए। माया गिराने की कोशिश करती है। चिट्ठी से शायद बच जाये। कुछ न कुछ फायदा होगा। क्योंकि बच्चों को तरस पड़ता है ना। बच्चे समझते हैं माया ने कान से पकड़ा हुआ है। अगर मेरे पास कोई राईट हैंड हो तो खुशी। सारा दिन लिखते रहे। जो कहते हैं फलाना स्वर्ग पधारा उनको भी चिट्ठी लिखनी चाहिए। कलियुग को स्वर्ग कहा जाता है क्या। सतयुग जब होगा तब सतयुग में जावेंगे ना। अभी तो कलियुग है। लेटर लिखने की भी प्रेक्टीस चाहिए। अभी देखें बाबा के पास कोई आते हैं।

झट हेड-आफिस बाप दादा से पत्र जाने से कल्याण हो सकता है। ऐसा टाईप-राईटर हो जो सब कुछ जानते हों। हिन्दी, सिन्धी, अंग्रेजी, टाईप सब जानता हो। यह भी बहुतों को जगाने में बहुत फायदा है। अच्छा बच्चों को गुड नाईट। मीठे मीठे बच्चों को बाप का नमस्ते।

एक बाप ही है जो सब को सुख देने वाला है। बाकी सभी दुःख देने वाले ही हैं। वह है ही सुखधाम। यह है दुखधाम। वह शिवालय यह वेश्यालय। भारत की महिमा अपरमअपार है। बाप भी भारत में ही आकर सर्व की सद्गति करते हैं। इसलिए भारत अविनाशी खण्ड है। अविनाशी बाप आकर पतितों को पावन बनाते हैं। मुझे कहते ही हैं पतित-पावन आकर पावन बनाओ। मुझे पतित दुनिया में ही बुलाते हैं। पावन दुनिया में थोड़े ही बुलावेंगे। यह भी खेल बना हुआ है। बाबा हंसी में डोरापा देते हैं। मुझे पतित दुनिया में बुलाते हो। पावन दुनिया में तो मुझे भूलजाते हो। याद करने की जरूरत ही नहीं। सतयुग में आऊं तो फिर पुनर्जन्म ले कलियुग में भी आना पड़े। यह ड्रामा बना हुआ है। मैं पुनर्जन्म नहीं लेता हूं। बाकी तो सभी लेते हैं। अच्छा ओ।